

सबसे उपयुक्त विकल्प योजना की पहचान के प्रणाली अध्ययन के लिए गठित उप-समिति की चौथी बैठक की कार्यवृत्त।

11.05.2015 को नई दिल्ली में प्रोफेसर पी.बी.एस शर्मा के अध्यक्षता के अंतर्गत सबसे उपयुक्त विकल्प योजना की पहचान के प्रणाली अध्ययन के लिए गठित उप-समिति की चौथी बैठक आयोजित हुई थी। उप-समिति के अध्यक्ष ने सभी सहभागियों का स्वागत किया। इस बैठक में उपस्थित सहभागियों की सूची संलग्नक I में प्रस्तुत की गई है।

रा.ज.वि.अ के महानिदेशक द्वारा महानदी (मणिभद्रा) - गोदावरी (दौलेश्वरम) लिंक परियोजना और रा.ज.वि.अ द्वारा आयोजित वैकल्पिक अध्ययनों पर एक प्रस्तुतीकरण पेश किया गया था। यह प्रकट किया गया कि यह लिंक परियोजना से ओडिशा में बारम्बार बाढ़ की स्थिति को टालेगी, सिंचाई प्रदान करेगी, घरेलू जल आपूर्ति और बिजली उत्पन्न करेगी। बैठक में प्रस्तुत जानकारियों का सार निम्न अनुसार है।

I. महानदी (मणिभद्रा) - गोदावरी (दौलेश्वरम) लिंक परियोजना (वास्तविक प्रस्ताव)

रा.ज.वि.अ के महानिदेशक ने सूचित किया कि लिंक परियोजना के वास्तविक प्रस्ताव में प्रस्तावित मणिभद्रा बाँध से 12165 मि.घ.मी जल दिक्परिवर्तन की परिकल्पना है। लिंक नहर 828 किमी लंबी है (ओडिशा में 302 किमी और आंध्र प्रदेश में 526 किमी) गोदावरी जलाशय के दौलेश्वरम बाँध में जाकर मिलती है। मार्ग में 4.43 लाख हेक्टेयर (ओडिशा में 3.52 लाख हेक्टेयर और आंध्र प्रदेश में 0.91 लाख हेक्टेयर) की सिंचाई आवश्यकता और मार्ग में घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्तियों को पूरा करने के बाद लिंक परियोजना अतिरिक्त दिक्परिवर्तन के लिए गोदावरी जलाशय में 6500 मि.घ.मी जल वितरित करता है। 375 मेगावाट के लगभग विद्युत उत्पादन होगा। इस परियोजना में 59400 हेक्टेयर की जलमग्नता शामिल है।

रा.ज.वि.अ के महानिदेशक ने यह भी बताया कि मणिभद्रा जलाशय के तहत बड़ी मात्रा में जलमग्नता के कारण ओडिशा सरकार वास्तविक महानदी (मणिभद्रा) - गोदावरी (दौलेश्वरम) लिंक के लिए सहमत नहीं थी। अतः, जलमग्नता को घटाने के लिए रा.ज.वि.अ ने वैकल्पिक अध्ययन किया है।

(i) विकल्प -क

प्रथम वैकल्पिक प्रस्ताव में मणिभद्रा में एक बाँध और महानदी-गोदावरी लिंक संरक्षण और महानदी पर बरमूल में एक बाँध और महानदी (बरमूल)-ऋषिकुल्या अंतः राज्य लिंक के साथ दो बाँध, अर्थात् तपंग में रौल (तेल उप-जलाशय) और बाघ (महानदी जलाशय) की परिकल्पना है।

रा.ज.वि.अ द्वारा आयोजित प्राथमिक अध्ययनों के अनुसार यह परियोजना 3.04 लाख हेक्टेयर की सिंचाई लाभ, मार्ग में घरेलू एवं औद्योगिक जल आपूर्ति नियंत्रण और 849 मेगावाट का जल विद्युत प्रदान करेगा, इसके अलावा 1058 घन मीटर प्रति सेकंड का बाढ़ न्यूनीकरण भी होगा। यह परियोजना गोदावरी जलाशय में 4519 मि.घ.मी जल वितरित करेगी। लगभग 23349 हेक्टेयर क्षेत्र जलमग्न होगा।

(ii) विकल्प -ख

दूसरे विकल्प के परियोजना अवयव में महानदी पर बरमूल में एक बाँध, महानदी (बरमूल)-गोदावरी (दौलेश्वरम) लिंक परियोजनाएं और तेल उप-जलाशय में 5 बाँध शामिल हैं।

यह परियोजना ओडिशा में 3.52 लाख हेक्टेयर का सिंचाई लाभ और मार्ग में घरेलू और औद्योगिक जल आपूर्ति नियंत्रण सहित 1039 मेगावाट जल विद्युत और 1108 घन मीटर प्रति सेकंड का बाढ़ न्यूनीकरण प्रदान करेगा। इसमें लगभग 15558 हेक्टेयर क्षेत्र जलमग्न होगा।

रा.ज.वि.अ के महानिदेशक ने उल्लेख किया कि विकल्प क और ख के ये अध्ययन अति प्राथमिक प्रकृति के हैं जो भौ.सू.तं और सुदूर संवेदन आंकड़ों पर आधारित है। ओडिशा सरकार के जल संसाधन विभाग के अधिकारियों के साथ इन विकल्पों पर चर्चा की गई है, इस संबंध में जिन्हें सकारात्मक समझा जा रहा है। उपर्युक्त प्रस्तावों पर पूर्व सम्भावित रिपोर्ट तैयार कर इन पर अधिक अध्ययनों की आवश्यकता है। राज्य सरकार के उत्तर के आधार पर रा.ज.वि.अ पूर्वसम्भावित रिपोर्ट तैयार करने की जिम्मेदारी लेगा ताकि प्रस्तावों की तकनीकी-आर्थिक पूर्वसम्भावित स्थापित की जा सके। उसके बाद चुने गए विकल्प का विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार किया जा सकता है।

विस्तार पूर्वक विचार-विमर्श के बाद निम्न संस्तुतियां/ निष्कर्ष उभरी है।

1. विकल्प क और ख का पूर्व पूर्वसम्भावित अध्ययन किया जाना होगा।
2. विकल्प ख में शामिल सभी 5 बांधों को विकल्प -क में भी शामिल किया जा सकता है।
3. दोनों विकल्पों क और ख में रबी सिंचाई और बाढ़ न्यूनीकरण के लाभ पर काम किया जा सकता है और इसे पू.व्य.रि में शामिल किया जा सकता है।
4. निम्न परिस्थितियों में प्रभावित क्षेत्र को बढ़ाने की पूर्वसम्भावित का परीक्षण किया जा सकता है:
 - (a) संरेखण को पश्चिमी के तरफ स्थानांतरित कर और उत्थापन आवश्यकताओं और वृद्ध प्रभावित क्षेत्र के लाभों का मूल्यांकन कर।
 - (b) पाँच जलाशयों (विकल्प -ख में सम्मिलित) को लिंक नहर के साथ जोड़ने का प्रयोजन, इससे ओडिशा को लाभ पहुँचेगा और अंतरणीय जल में वृद्धि पर भी काम किया जा सकता है।
5. अगली बैठक के दौरान रा.ज.वि.अ द्वारा गोदावरी और कृष्णा नदियों के मध्य लिंक परियोजनाओं को कवर करता एक प्रस्तुतीकरण पेश किया जाएगा।

अध्यक्ष का धन्यवाद करते हुए बैठक समाप्त हुई।

संलग्नक - I

सबसे उपयुक्त विकल्प योजना की पहचान के प्रणाली अध्ययनों के लिए गठित उप-समिति की चौथी बैठक के सहभागी।

- | | |
|--|---------|
| 1. प्रोफ़ेसर पी.बी.एस शर्मा, (सेवा-निवृत्त)
सीईडी, आईआईटी, दिल्ली | अध्यक्ष |
| 2. प्रोफ़ेसर कामता प्रसाद,
अध्यक्ष, सं.प्र.आ.वि.सं,
दिल्ली | सदस्य |
| 3. डॉ शरद के जैन,
वैज्ञानिक 'जी', रा.ज.सं,
रूकी | सदस्य |
| 4. प्रोफ़ेसर संजीव कपूर,
आईआईएम, लखनऊ | सदस्य |
| 5. श्री एम. इलंगोवन,
सेवा-निवृत्त मुख्य अभियंता, के.ज.आ | सदस्य |
| 6. श्री श्रीराम वेदिरे,
सलाहकार, ज.सं,न.वि और गं.संमं | सदस्य |

7. श्री एन.सी जैन,
निदेशक (तकनीकी),
रा.ज.वि.अ

सचिव

विशेष अतिथिगण

8. श्री एस. मसूद हुसैन,
महानिदेशक, रा.ज.वि.अ
9. श्री एच.एन दिक्षित,
मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ, लखनऊ
10. श्री के.पी गुप्ता,
अधिवीक्षण अभियंता, रा.ज.वि.अ, नई दिल्ली
11. श्रीमती जैसी विजयन,
निदेशक (एमडीयु), रा.ज.वि.अ, नई दिल्ली